नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

ट्रंप ने दुनिया को फिर मुश्किल में डाला

अमेरिकी डोनाल्ड ट्रंप ने दुनिया को एक बार फिर मुश्किल स्थिति में डाल दिया है. उन्होंने रूसी तेल खरीदने वाले देशों पर 100 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने का फैसला किया है जिसे अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की मंजूरी मिल गई है.यह दरअसल,पूरी दुनिया के लिए चिंता बढ़ाने वाला घटनाक्रम है. अमेरिकी कांग्रेस में विधेयक पर चर्चा के दौरान भारत का नाम उन दस देशों में शामिल किया गया है, जो रूस से ऊर्जा खरीदते हैं. अमेरिका की इस पहल का मूल उद्देश्य रूस की तेल और गैस से होने वाली आय पर दबाव बढ़ाना है. अमेरिकी पक्ष का तर्क है कि रूस की ऊर्जा आय यूक्रेन में जारी युद्ध को आर्थिक आधार देती है. लेकिन इस रणनीति का असर भारत जैसे उन देशों पर भी पड़ रहा है, जिन्होंने अपनी ऊर्जा जरूरतों और आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए रूस से तेल खरीदना बढ़ाया है.यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों के प्रतिबंधों से वैश्विक ऊर्जा बाजार में बड़ा बदलाव आया. भारत ने इसी दौरान रूस से कच्चे तेल की खरीद बढ़ाई और इससे उसे अपेक्षाकृत प्रतिस्पर्धी कीमतों पर ऊर्जा उपलब्ध कराने में मदद मिली. भारत दुनिया के बड़े तेल आयातक देशों में है और उसकी अर्थव्यवस्था के लिए ऊर्जा की कीमतों का सीधा संबंध महंगाई, परिवहन लागत और औद्योगिक गतिविधियों से है. ऐसे में किसी एक स्रोत से तेल खरीद अचानक कम करना आसान नहीं होगा. महंगे वैकल्पिक स्रोतों पर निर्भरता बढ़ने का असर अंततः भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है. यही इस अमेरिकी पहल की सबसे बड़ी पेचीदगी है. रूस पर दबाव बनाने की कोशिश में भारत पर 100 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने का विकल्प अमेरिकी कानून में शामिल होता है तो इसका असर केवल ऊर्जा कारोबार तक सीमित नहीं रहेगा. भारत-अमेरिका व्यापार भी प्रभावित हो सकता है और अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता पर दबाव बढ़ सकता है. खासकर ऐसे समय में जब दोनों देशों के बीच व्यापार और टैरिफ को लेकर बातचीत चल रही है, यह नया प्रावधान अनिश्चितता बढ़ाने वाला है.भारत के लिए राहत की बात यह है कि 100 प्रतिशत टैरिफ अभी कोई तय फैसला नहीं है. लेकिन इसे हल्के में भी नहीं लिया जा सकता. महत्वपूर्ण यह है कि यह पहल केवल राष्ट्रपति ट्रंप के प्रशासन का फैसला नहीं, बल्कि अमेरिकी कांग्रेस की प्रक्रिया से जुड़ी है. यदि यह कानून बनता है तो भविष्य के अमेरिकी राष्ट्रपतियों के पास भी इसका इस्तेमाल करने का अधिकार रहेगा. इसलिए भारत को इसे अल्पकालीन कूटनीतिक समस्या के बजाय दीर्घकालीन रणनीतिक चुनौती के रूप में देखना होगा. भारत को अमेरिका के साथ संवाद और व्यापारिक रिश्ते मजबूत रखते हुए अपनी ऊर्जा सुरक्षा के हितों को भी स्पष्ट रूप से सामने रखना होगा. साथ ही तेल आपूर्ति के स्रोतों में विविधता, घरेलू ऊर्जा उत्पादन और वैकल्पिक ऊर्जा पर निवेश बढ़ाना समय की जरूरत है. वैश्विक राजनीति में ऊर्जा अब केवल कारोबार का विषय नहीं रही. रूस-यूक्रेन युद्ध ने इसे कूटनीतिक दबाव का हथियार भी बना दिया है. ऐसे में भारत की चुनौती किसी एक पक्ष के साथ खड़े होने की नहीं, बल्कि अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए संतुलन बनाए रखने की है.

नई पीढ़ी को नरेंद्र मोदी से मिले उड़ान के लिए पंख

पी.वी. सिंधु

> हर पीढ़ी को वे सीमाएँ विरासत में मिलती हैं जिन्हें उसने स्वयं नहीं चुना होता. हमारे दादा-दादी को अभाव विरासत में मिला. हमारे माता-पिता को अनुमति और आदेश विरासत में मिलेऔर मिला ऊपर बैठे किसी व्यक्ति के 'हाँ' कहने का लंबा इंतज़ार. हमें कुछ अलग विरासत में मिला है : एक ऐसा देश जो आखिरकार इसका निर्माण करने के लिए हम पर विश्वास करता है. यही इस नेतृत्व का वास्तविक मापदंड है. यह कोई योजना या आंकड़ा नहीं, बल्कि एक युवा भारतीय की सोच और कल्पना के दायरे में आया बदलाव है. जुलाई में अंतरिक्ष तक पहुँचा रॉकेट उन लोगों द्वारा बनाया गया था, जिनसे कभी कहा गया था कि उनके लिए कोई दरवाज़ा ही नहीं खुला है. वह खुलादरवाज़ा अब मौजूद है और ऐसे ही हज़ार अन्य दरवाज़े भीखुले हैं. अब किसी युवा भारतीय के लिए केवल यही सवाल नहीं रह गया है कि उसे सपने देखने की अनुमति है या नहीं ; अब सवाल यह है कि वह कितनी दूर जाने का इरादा रखता है.

क्या होता अगर दस साल पहले कोई भारतीय युवा लड़की कहती कि उसे रॉकेट बनाना है. उसे इसरो में शामिल होकर नहीं, बल्कि अपना खुद का रॉकेटबनाना है. ऐसी स्थिति में शायद उसके आसपास के लोग खामोश रह जाते. फिर कोई बहुत सहानुभूति से उसे समझाता कि यह उसके बस की बात नहीं है. वह समझाता की अंतरिक्ष पर सिर्फ सरकार का हक होता है. इतने बड़े सपने तो दूसरे देशों के लोगों के लिए होते हैं.

18 जुलाई, 2026 को एक प्राइवेट भारतीय कंपनी का बनाया रॉकेट अंतरिक्ष की कक्षा में पहुंच गया. इस रॉकेट को स्काईरूट ने बनाया था, जिसकी बुनियाद दो नौजवान इंजीनियरों ने रखी थी. दोनों ने अपने सुरक्षित काम छोड़ कर इस लगभग नामुमकिन सपने को सच करने की ठान रखी थी. स्काईरूट की इस कामयाबी के साथ ही भारत दुनिया के उन सिर्फ तीन देशों में शामिल हो गया जहां किसी आम नागरिक की प्राइवेट कंपनी अंतरिक्ष तक पहुंच सकती है. इस कामयाबी को हासिल करने वाले बाकी दो देश अमेरिका और चीन हैं. वह लड़की, जिसके सपने के पूरा होने का किसी को भी भरोसा नहीं था, अब कह सकती है- ''मैं एलन मस्क बनना चाहती हूं. यह कोई नारा नहीं, बल्कि मेरा पक्का इरादा है. ''बेशक, वह अपने सपने को पूरा करने की यात्रा को शुरू कर सकती है. पिछले दस वर्षों में हमारे देश में प्रतिभाओं में कोई बदलाव नहीं आया है. भारत के पास काबिलियत हमेशा से थी. जो चीज़ बदली, वह था अवसर. हमारे इतिहास में ज्यादातर समय किसी बड़े सपने का जवाब यह होता था कि ऐसा करना मुमकिन नहीं है. इसलिए नहीं कि काबिलियत में कोई कमी थी. इसलिए कि मंजिल तक पहुंचने का दरवाजा ही बंद था. नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सबसे खामोश और सबसे बड़ी कामयाबी यह रही कि अब वह दरवाजा खुल चुका है. इस बदलाव की गहराई को समझना बहुत जरूरी है. दशकों तक भारत में हर बड़े सपने को रुकावटों का सामना करना पड़ता था. कोई भी अहम काम करने के लिए आपको लाइसेंस, मंजूरी, जान-पहचान या प्रभावशाली परिवार के नाम की जरूरत पड़ती थी. देश में सपने देखने वालों की कभी कोई कमी नहीं थी. कमी थी तो सिर्फ दरवाजों की. और जब दरवाज़े कम हों तो वे सबसे पहले उनके लिए खुलते हैं जिनके पास पहले से चाबियां होती हैं. नौजवान, गरीब और वे लोग दरवाज़े के बाहर ही इंतज़ार करते रह जाते थे जिनके पास कोई बड़ी पहचान नहीं थी. प्रधानमंत्री मोदी ने इस बंद दरवाजे को देखा और समझा कि असल में इसके क्या कारण थे. उन्होंने इस बदलाव को एक ही लाइन में बयान किया- सरकार का रवैया 'जब तक इजाज़त न हो, तब तक पाबंदी' से बदल कर 'जब तक मना न हो, तब तक इजाज़त' हो गया है. उनके पूरे दशक के काम के पीछे एक पक्का संकल्प रहा है- पाबंदियों की इस दीवार को गिराना और उसकी जगह खुले दरवाज़ों वाला देश बनाना. ऐसा देश जहां इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसकी संतान हैं. फर्क इससे पड़ता है कि आप क्या बनाने की काबिलियत रखते हैं. जरा गौर करें कि क्या-क्या खुल गया है. अंतरिक्ष पर 60 साल तक सरकार का एकाधिकार रहा. 2020 में उसे उन सबके लिए खोल दिया गया जिनके पास रॉकेट छोड़ने की योग्यता थी. फिर हमारे खेतों के ऊपर का आसमान खुला. उस रूल बुक को फाड़ कर फेंक दिया गया जिसके मुताबिक एक छोटे से ड्रोन को उड़ाने के लिए दर्जनों कागज़ात और इजाज़तों की ज़रूरत पड़ती थी. अब किसी छोटे शहर का कोई नौजवान अपना ड्रोन बना सकता है. उसे फोन के जरिए रजिस्टर कर अपना कारोबार शुरू कर सकता है. गांवों की हज़ारों महिलाओं के हाथों में ड्रोन सौंप दिए गए जिससे भविष्य का एक हिस्सा उनकी आजीविका का जरिया बन गया. इनमें से कुछ बदलाव बहुत दबे पांव आए लेकिन उनकी अहमियत उतनी ही ज्यादा थी. 2021 में मानचित्रों को मुक्त कर दिया ताकि किसी भारतीय कंपनी को उस देश का सर्वे करने के लिए किसी मंजूरी की ज़रूरत नहीं पड़े जिसमें वह पहले से काम कर रही है. 2023 में एक ही कानून के ज़रिए सैकड़ों कानूनों में बदलाव किया गया. इस कानून के जरिए एक हज़ार से ज्यादा वैसे मामलों में आपराधिक सजा के प्रावधान को खत्म कर दिया गया जिनका संबंध कागजी औपचारिकताओं से था. उद्देश्य यह था कि सिर्फ एक फॉर्म छूट जाने पर किसी को जेल नहीं जाना पड़े.

(लेखक दो बार की ओलंपिक पदक विजेता है और वर्तमान में आंध्र प्रदेश सरकार में डिप्टी कलेक्टर के पद पर कार्यरत है.)

महाकौशल की डायरी

जबलपुर भाजयुमो अध्यक्ष के लिए भोपाल से भी लगाया जा रहा जोर

अविनाश दीक्षित

महाकौशल के नरसिंहपुर, सिवनी, मंडला में भारतीय जनता युवा मोर्चा अध्यक्ष के नाम की घोषणा के लिए रस्साकशी उतनी नहीं है कि भोपाल में बैठे पार्टी के शीर्ष नेताओं को माथापच्ची के साथ कई तरह के कटाक्ष को सुनना पड़े, लेकिन बात जबलपुर की करें तो यहां के भाजयुमो अध्यक्ष के प्रबल दावेदार के नाम पर मुहर लगाने से पहले भोपाल में बैठे शीर्ष नेताओं का बड़ा समूह पिछले कुछ दिनों से चैन से रह नहीं पा रहा है. भगवादल के गलियारों में चल रहीं चर्चाओं पर गौर करें तो खुद भोपाल के शीर्ष नेताओं का समूह चाह रहा है कि जल्द से जल्द जबलपुर में भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष के नाम का ऐलान कर दिया जाए, मगर जमीनी तौर पर यह काम पूरा होते हुए उतना आसान नहीं दिख रहा है। हैरानी की बात तो यह निकलकर आ रही है कि जबलपुर में अपनी पसंद का भाजयुमो अध्यक्ष बनवाने के लिए जबलपुर ही नहीं बल्कि प्रदेश में बैठे पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष से लेकर प्रदेश स्तरीय अन्य बड़े नेता एड़ी चोटी का जोर लगाने में भिड़े हैं. भाजपाई खेमे की चर्चाओं के अनुसार एबीवीपी से श्रवण सिंह राठौर को भाजयुमो अध्यक्ष बनाने के लिए प्रदेश स्तर के बड़े भाजपा नेता श्याम टेलर, ईशान के लिए सांसद आशीष दुबे, विधायक अभिलाष पांडे, श्याम टेलर लाबिंग कर रहे हैं. शुभम अरिहंत के लिए भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष शैलेंद्र, रौनक अग्रवाल के लिए संदीप जैन, वहीं रविंद्र तिवारी के लिए लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह और भाजपा नगर अध्यक्ष रत्नेश सोनकर प्रयासरत हैं. खबर यह भी पुख्ता है कि जबलपुर भाजपा जिला अध्यक्ष रत्नेश सोनकर ने मंत्री राकेश सिंह का सहारा लेकर जबलपुर पूर्व विधानसभा से प्रबल दावेदार रविंद्र तिवारी को भाजयुमो अध्यक्ष बनने के लिए भोपाल में एड़ी चोटी का जोर लगा दिया है, लेकिन इस जोर को प्रदेश स्तर के नेताओं की वजनदारी कितना हल्का करती है यह आने वाला समय ही बताएगा. फिलहाल इस मुद्दे पर सार्वजनिक रूप से कोई अंतर्कलह सामने नहीं आई है लेकिन व्हॉट्सएप ग्रुपों में चल रहीं बातों, कटाक्षों पर दृष्टिपात करें तो अपने अपने पसंद के युवा नेता को इस पद पर बैठाने की लड़ाई, अब आत्म सम्मान और वर्चस्व स्थापित करने की लड़ाई बन गई है. अंतिम मुहर किस नाम पर लगती है यह तो समय ही बताएगा, परन्तु अध्यक्ष के नाम के ऐलान के बाद जो होगा उसे साधना और फिर आगामी चुनाव में पार्टी के हित में उन्हें मनाना, यह पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के सामने बड़ी चुनौती का सबब बन सकता है. राजनैतिक जानकारों की मानें तो चाहे कोई कुछ भी कर ले पर अंतिम निर्णय जबलपुर में भारतीय जनता पार्टी के भाजपा जिला अध्यक्ष की पसंद पर ही लिया जाएगा. कयास लगाए जा रहे हैं कि अब जल्द से जल्द जबलपुर में भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष के नाम का ऐलान कर दिया जाएगा और तमाम सवालों को विराम दे दिया जाएगा. हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर एक माह तक होने वाले विभिन्न कार्यक्रम शुरू हो गये हैं, ऐसे में नये भाजयुमो अध्यक्ष की घोषणा होने के आसार कम ही लग रहे हैं.

जनआक्रोश का भरता जा रहा घड़ा...

कहां गायब हो गए साहब, अब तो वक्त है जनता के बीच आकर उनके सवालों के जवाब देने का.. ये बातें बालाघाट में इन दिनों आम आदमी के मुंह पर बसी हुई हैं. इसकी मुख्य वजह बैगा आदिवासी अंचल में बच्चों की मौतें होना और दूसरी तरफ किरनापुर में मरारमाली समाज का प्रदर्शन हिंसक झड़प के रूप में बदलना रहा . दोनों घटनाओं की परिस्थितियां अलग हैं लेकिन सड़कों पर बढ़ रही लोगों की बेचैनी अब जिम्मेदारों को कटघरे में खड़ा कर रही है. क्षेत्रीय जनता आस लगाए बैठे है कि जिम्मेदार सांसद और विधायक उनके पास आएं लेकिन फिलहाल अभी किसी जिम्मेदार ने ऐसा नहीं किया है जिसका नतीजा है कि बालाघाट में जनआक्रोश धीरे धीरे अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है। बैगा बच्चों की मौत का मामला हो या किरनापुर में पुलिस के खिलाफ आक्रोश, जनता चाह रही है कि सिर्फ उनकी बात सुनी जाए और शिकायतों की निष्पक्ष जांच के साथ जिम्मेदारी तय हो मगर मौजूदा हालात जो बयां कर रहे हैं उससे तो साफ है कि बालाघाट में सतत् उपेक्षा की छोटी सी चिंगारी कभी भी दावानल का रूप ले सकती है जिसे सम्हाल पाना भी जिला प्रशासन के लिए मुश्किल साबित हो सकता है. हैरानी होती है जब ये पता चलता है कि इतने गंभीर मुद्दों के बाद जिम्मेदार जनप्रतिनिधि मुंह छिपाकर बैठे रहें और सड़कों पर निर्दोषों की जान पर बन आए. खबर है कि बालाघाट के जिम्मेदारों का समूह इस बात का इंतजार कर रहा है कब मामला शांत हो और फिर वह जनता के सामने आकर बयानबाजी करें, किन्तु ये देरी कहीं एक और बड़ी घटना की वजह न बन जाए ये अपने आप में एक सबसे बड़ा सवाल बनकर खड़ा हुआ है. देखना होगा कि जिम्मेदारों की चुप्पी आखिर कब तक रहेगी.

महंगाई देखते हुए बढ़ सकती है बैंक दर

भारत ही नहीं, सारे विश्व में महंगाई तेजी से बढ़ रही है. 6 माह से भी अधिक समय से चल रहा ईरान युद्ध भी इसकी एक वजह है. कच्चे तेल के दाम फिर 100 डॉलर प्रति बैरल से ज्यादा हो गए हैं. स्टेट बैंक के विश्लेषणकर्ताओं की राय में यह दाम 123 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकते हैं. इससे पेट्रोल, डीजल की कीमतों में फिर इजाफा होगा. इस वर्ष की शुरुआत में खुदरा महंगाई दर 2.7 फीसदी के आसपास थी, इसलिए विकास को गति देने के लिए नियोजनकर्ताओं ने बैंक दरें नीची रखीं. अब अगस्त में महंगाई दर 4.8 प्रतिशत तक पहुंच गई है इसलिए विकास और कीमतों के स्थायित्व के बीच संतुलन कायम रखने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक हस्तक्षेप कर बैंक दर बढ़ा सकता है. महंगाई बढ़ने के 2 प्रमुख कारण हैं. एक है तेल के दाम में वृद्धि और दूसरा कमजोर मानसून से फसलों को नुकसान ! खाद्यान्न के दाम बढ़ने लगे हैं. मई में ईंधन दरें बढ़ाने के बाद से स्थिरता बनी हुई थी, किंतु अब दाम में और वृद्धि हो सकती है. टिकाऊ उपभोक्ता सामग्री और वस्त्रों के दाम भी बढ़ सकते हैं. त्यौहारों के मौसम में मांग बढ़ जाती है. इससे महंगाई वृद्धि होने लगती है. अक्टूबर-नवंबर के दौरान ऐसा ट्रेंड देखा जाता है. विश्व के संपन्न देशों में महंगाई दर या मुद्रास्फीति को 2 प्रतिशत या उससे नीचे रखने का लक्ष्य रखा जाता है, लेकिन अब वहां महंगाई दर 3 प्रतिशत के करीब पहुंच जाने से यूरोपीय सेंट्रल बैंक ने अपनी दर 25 बेसिक पॉइंट बढ़ा दी. अमेरिकी फेडरल बैंक भी ऐसा कर सकता है. बैंक ऑफ जापान द्वारा भी बैंक दर बढ़ाए जाने की संभावना है. भारत में जुलाई में ऊर्जा व खाद्य कीमतें 3.9 प्रतिशत से बढ़कर 4.2 प्रतिशत हो गई. वेतन वृद्धि की दर कम होने से बढ़ती कीमतों से मध्यम और निम्न आय वर्ग प्रभावित हो सकता है. भारतीय रिजर्व बैंक की नीतिगत समिति की अगली बैठक अक्टूबर में है. यदि तब भी दाम बढ़ने का सिलसिला जारी रहा तो दिसंबर में बैंक दर बढ़ाई जा सकती है.

निशानेबाज

UCC के मुद्दे पर भरोसा टूटा, NDA ने दिखाया शाह को अंगूठा

पड़ोसी ने हमसे कहा, अमित शाह ने सोचा भी न होगा कि एनडीए की 3 सहयोगी पार्टियां यूसीसी (यूनिफार्म सिविल कोड) के मुद्दे पर उन्हें अंगूठा दिखा देंगी. शाह उनसे यह भी नहीं कह सकते- हमारी बिल्ली, हमीं से म्याऊं ! वह तो मानकर चल रहे थे कि एनडीए की पार्टियां पूरी तरह बीजेपी की जेब में समा गई हैं और उनकी किसी घोषणा पर चूं-चपड़ नहीं करेंगी. उनसे कहा जाएगा- उठ तो उठ, बैठ तो बैठ ! एनडीए को अपने इशारे पर नचाने में अमित शाह फेल हो गए. जदयू, टीडीपी और लोजपा (रामविलास) ने कहा कि 2029 तक देश के 21 एनडीए शासित राज्यों में समान नागरिकता कानून अथवा यूसीसी लागू करने के बारे में उनसे कोई राय नहीं ली गई. किसी भी तरह की चर्चा नहीं हुई. इस मुद्दे पर जब जरूरी होगा, तब देखा जाएगा.' हमने कहा, 'बीजेपी नेताओं का मिजाज ही ऐसा है. उन्हें लगता है

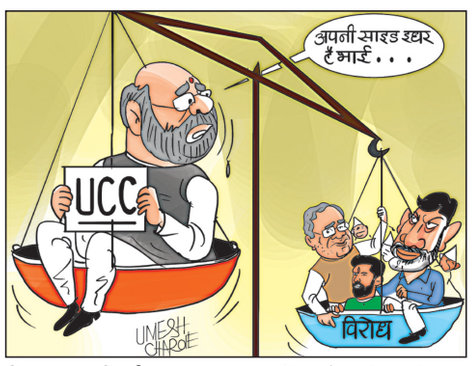

कि उनका निर्णय या हुक्म एनडीए को आंख मूंदकर मानना होगा जबकि मोदी सरकार नीतीशकुमार, चंद्राबाबू नायडू की पार्टियों के सहयोग पर टिकी हुई है. बीजेपी की लोकसभा में सिर्फ 240 सीटें हैं. एनडीए ने उन्हें 272 के बहुमत तक पहुंचाया. यूसीसी का मुद्दा बीजेपी के लिए ठीक है लेकिन बिहार और आंध्र प्रदेश में जदयू और टीडीपी अपने मुस्लिम वोटों को नाराज नहीं कर सकते इसलिए वह अमित शाह की घोषणा से सहमति नहीं रखते.' पड़ोसी ने कहा, 'गठबंधन की राजनीति ऐसी ही होती है. वहां हर समय समान राय नहीं बन पाती. जब अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार थी तो उसमें 24 छोटी-बड़ी पार्टियां शामिल थीं. इस वजह से बीजेपी अपना एजेंडा लागू नहीं कर पाती थी. 2024 के आम चुनाव में 'अबकी बार 400 पार' का उसका नारा खोखला साबित हुआ. पार्टी 240 सीटों से आगे नहीं पढ़ पाई. खुद की मेजॉरिटी हो तो बीजेपी कुछ भी कर सकती है. अभी तो एनडीए की सहयोगी पार्टियों की मर्जी संभालनी होगी और सतर्कता से आगे बढ़ना होगा. ऐसा नहीं चलेगा कि राजा बोले हाथी डोले !'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर 12383

- डॉ. सागर खादीवाला

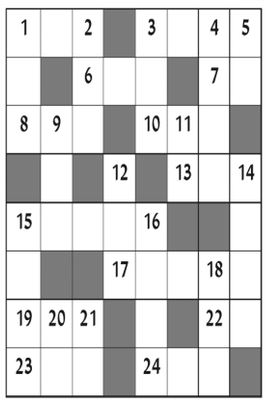

ऊपर से नीचे

1. घास कपड़े आटे या मिट्टी आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार या मूर्ति, बुत, प्रतिमा 2. रह-रहकर होने वाली पीड़ा, टीस 3. सिहरन, कंपकंपी, थर्राहट, डर, भय, 4. भय, खौफ 5. मतवालापन, मस्त होने का भाव 9. यदि ऐसा है ही, अगरचे (सं.) 11. किशमिश बादाम आदि सुखाए हुए बढ़िया फल 12. आज्ञा 14. अफवाह, बदनामी, कोलाहल (सं.) 15. पूरी निष्ठा के साथ कार्य करने का गुण 16. असभ्यता, जंगलीपन, पागलपन 18. कष्ट, पीड़ा 20. छोटा या पतला नल, बंदूक का अगला भाग 21. अल्प, थोड़ा

बाएं से दाएं

1. कुबेर का विमान जिसे रावण ने छीन लिया था, फूल (सं.) 3. सदा, सदैव, हमेशा6. परामर्श, राय 7. हाथी, अस्तित्व, व्यक्तित्व 8. योग्य, उचित, समर्थ 10. रमा के पति, विष्णु 13. वायु द्वारा उत्पन्न (सं.) 15. भारतीय क्रिकेट टीम के एक भूतपूर्व ऑलराउंडर कप्तान 17. समकालीन राजाओं में सबसे बड़ा, फिल्म उमरावजान के गीतकार 19. टीस, चसक, तबला-मृदंग आदि की ध्वनि 22. तुम्हारा (सं.) 23. शिक्षा 24. कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना

Solution 12382

वि	कृ	त		वि	नि	म	य
प्र	ति	मा		धा		सा	की
ला		शा	स	न		न	न
प	र्व		मा		झ		
		अ	ज	ग	र		ह
फु	ल	का			ना	वि	क
ला		र	स	द		मा	ला
ना		थ	र		बि	ता	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अचानक धन लाभ का योग है. शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. स्वास्थ्य सामान्य रहेगा. वर्ष के मध्य में भौतिक सुखों की प्राप्त होगी. अधिकारियों से मेल मिलाप साहस में वृद्धि होगी. व्यर्थ का विवाद होगा. मन व्यथित रहेगा. भविष्य की चिन्ता से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. स्वास्थ्य सामान्य रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों के लिये भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को सामाजिक कार्यो में विवाद से मन व्यथित रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मेल मिलाप होगा. साहस में वृद्धि होगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को अनुकूल लाभ मिलेगा. धार्मिक कार्यो में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य पर ध्यान देना हितकर रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान की प्राप्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य सुन्दर, दुबला, पतला, लंबे कद का परिश्रमी होगा. किसी खास विद्या का ज्ञाता होगा. लेखन अध्ययन, रचनात्मक कार्यो में लाभ प्राप्त होगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

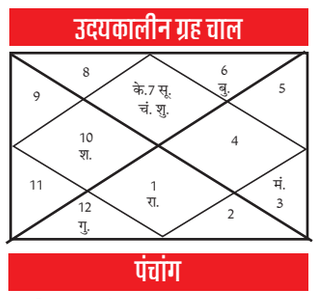

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2083 भाद्रपद शुक्ल सप्तमीं भृगुवासरे दिन 12/16, ज्येष्ठा नक्षत्रे रात 11/11, प्रीति योगे दिन 3/17, वणिज करणे सू.उ. 5/56, सू.अ. 6/4, चन्द्रचार वृश्चिक रात 11/11 से धनु, पर्व- महालक्ष्मीं व्रत प्रारम्भ, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7.

शुभांक- 0,3,7.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल सप्तमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से जमीन के अंदर से प्राप्त होने वाले पदार्थ, तिल, और उड़द कालीमिर्च, लोहा के भाव में तेजी होगी. आज 10 बजकर 30 मिनिट से 20 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभदायक रहेगा.

भाग्यांक 5165 है.

मेष- पारिवारिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी. शारीरिक कष्ट रह सकता है, किन्तु आपकी सूझबूझ से बाधायें दूर होंगी.

वृषभ- अचानक दूर गये मित्र के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होगा. साहसिक कार्यो की प्रशंसा होगी.

मिथुन- आर्थिक क्षेत्र में प्रयासों में बांछित सफलता मिलेगी. राजकीय कार्यो में लाभ प्राप्त होगा.

कर्क- कोई ऐसा कार्य संपन्न होगा, जिसके बदले आपको प्रशंसा प्राप्त होगी. मूल्यवान वस्तु प्राप्त होने का योग है.

सिंह- शिक्षा के क्षेत्र में किया गया प्रयास सार्थक होगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. संतोष रहेगा.

कन्या- स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखकर कार्य करें, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. शत्रु वर्ग परास्त होगा.

तुला- उपहार या सम्मान प्राप्त होगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. दूर दराज की यात्रा का योग है. व्यय भी होगा.

वृश्चिक- पारिवारिक सुख एवं सहयोग मिलेगा. सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. नियमितता का ध्यान रखें.

धनु- दाम्पत्य जीवन सुखमय मधुरतापूर्ण रहेगा. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी. बहुप्रतीक्षित कार्य बनने से हर्ष होगा.

मकर- अनचाही यात्रा करनी पड़ सकती है. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा. शुभ कार्यो के बनने का योग है.

कुम्भ- किसी नवीन योजना का विकास होगा. परिश्रम की अधिकता रहेगी. मित्र वर्ग आपकी मदद करेगा.

मीन- आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. कोई ऐसा कार्य न करें, जो आपको आगे चलकर कष्टप्रद हो.

SUDOKU 7515

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो, इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7514

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1